Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-5, No. II, Aug.-2018, pp.Hin.26-28

बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका

डॉ0 मनोज कुमार मिश्र, प्रवक्ता इतिहास
कालूराम इण्टर मिडियट कालेजशीतलागंज,
प्रतापगढ़ उत्तर–प्रदेश भारत।

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य प्रचलित है **तमसो मा ज्योर्तिगमय** इसका अर्थ है अन्धेरे से उजाले की ओर जाना। इस प्रक्रिया को वास्तविक अर्थ में पूरा करने के लिए शिक्षा, शिक्षक और समाज तीनों की बड़ी भूमिका होती हैं। भारतीय समाज में जहाँ शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास का साधन माना गया हैं वहीं शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। महर्षि अरविन्द ने एक बार शिक्षकों के सम्बन्ध में कहा था कि 'शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींच कर उन्हें शक्ति में निर्मित करते हैं।' महर्षि अरविन्द का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक होते हैं। इस प्रकार एक विकसित, समृद्धि एवं हर्षित राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है।
मुख्य शब्द– शिक्षक, शिक्षालय,

ऋग्वेद में गुरु को "वाचस" कहा गया जो गूढ़ ज्ञान का ज्ञाता है, लेकिन अथर्ववेद में गुरु को "आचार्य" ही कहा गया है। वेदों में आचार्य यम, वरुण, सूर्य तथा चन्द्रमा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

आचार्य के अतिरिक्त गुरु को उपाध्याय नाम से भी सम्बोधित किया गया है। उपाध्याय का अर्थ है, "उपेत्यअधियतेऽस्मात्" अर्थात् समीप में बैठकर जिससे विद्या प्राप्त की जाए वह उपाध्याय है। मनुस्मृति में कहा गया है, "एकदेशमतुवेदस्य वेदांगों धीयावापुनः यी अध्यायप्यत्तिवृत्यर्थ" उपाध्याय तो सभी हैं। सबसे पास बैठकर ही शिक्षा ग्रहण ही जाती है। ज्ञान मार्ग का उपदेश देने वाला गुरु ही सबसे श्रेष्ठ है।

वैदिक युग के अतिरिक्त मुस्लिम–काल में गुरु को काजी, मौलवी नाम से पुकारा जाता रहा है। आधुनिक काल में गुरु, शिक्षक, 'टीचर एजूकेटर' के नामों से भी अभिहीत किया गया। वर्तमान रूप शिक्षक के रूप में दृष्टव्य है, "शिक्षक वह है जो शिक्षा देता है अर्थात् मात्रा, स्वर, शब्द का ज्ञान कराता है, उसे शिक्षक कहते हैं। आधुनिक युग में शिक्षक का रूप पूर्णरूप से परिवर्तित हो चुका है। वह केवल शब्द, व्याकरण, ज्ञान का ही द्योतक नहीं है अपितु वह शिष्य के व्यवहार, उसकी रूचियों, वृत्तियों आदि का भी ज्ञाता है। शिक्षक के अनेक आधुनिक शिक्षा–दर्शन में निहित वादों में परिवर्तित रूप को देख सकते हैं। ये वाद पाश्चात्य विद्वानों के मतों पर आधरित है।"

आज देश से सरकारी स्कूलों में शिक्षा के गिरते स्तर को लेकर घमासान मचा हुआ है प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों की शिक्षा का हाल खराब है। केन्द्र और राज्य सरकारों के आगे शिक्षा को बेहतर और व्यावहारिक बनाने की कई चुनौतियाँ हैं। नए दौर की तकनीकों से लेकर सामाजिक और पारिवारिक ढांचा काफी हद तक बदल चुका है। वैश्विकता और बाजारीकरण की दखलंदाजी बढ़ चुकी है। पारंपरिक स्कूली ज्ञान के साथ–साथ कोचिंग, ट्यूशन को आवश्यक मान लिया गया है। ऐसे में न केवल शिक्षकों का कर्तव्य–बोध धूल–धूसरित हो चुका है, बल्कि बच्चों की बौद्धिक क्षमता में आये बदलावों के आगे वे काफी बौने व पिछड़े नजर आने लगे हैं।

आज हमारी शिक्षा व्यवस्था और इसके लिए बनाई गयी नीतियां काफी पुरानी पड़ चुकी हैं। बहुत शिक्षक डिजिटल जमाने की ई–क्रान्ति से उपजी ई–शिक्षा और इसके क्रान्तिकारी संसाधनों से दूर हैं। तकनीकी ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में यह बदलाव और भी कम समय में असर दिखाने लगता है। अतः शिक्षकों को हर विधा से अपडेट –अद्यतन जानकारी रखना होगा। यदि शिक्षक योग्य एवं चरित्रवान होगा तो उसके प्रभाव से शिक्षार्थी निश्चित ही योग्य एवं चरित्रवान बनेंगे। यदि शिक्षण ही घटिया स्तर का होगा तो शिक्षा की दुर्गति शिक्षार्थी की अधोगति तथा राष्ट्र की दुर्गति होगी। बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है क्योंकि आज मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। शिक्षक की गुणवत्ता के विषय में कालिदास कहते है कि– "किसी शिक्षक में तो स्वयं उत्तम गुण की पात्रता होती है और किसी शिक्षक को दूसरे को वह गुण सिखाने में विशेष प्रवीणता होती है। जिसमें दोनों ही बातें ठीक से हों, वही शिक्षकों में सर्वश्रेष्ठ माना जाना चाहिए।"

Scanned by CamScanner

इस कथन से यह विदित होता है कि हमें उस शिक्षक की आवश्यकता है जो स्वयंसे सम्बन्धित शिक्षा का संज्ञान रखता हो तथा शिक्षार्थी तक सम्बन्धित शिक्षा को सम्प्रेषित कर सके। शिक्षक का शिक्षण–कौशल मनोवैज्ञानिक तथा प्रभावी रीति का होना चाहिये तभी तो कोमलमति बालक या वयस्क विद्यार्थी सम्बन्धित ज्ञान को आसानी से हृदयंगम कर सकेगा। शिक्षार्थी के सर्व विधि विकास में शिक्षक की विशेष भूमिका होती है।

शिक्षा राष्ट्र की प्रत्यक्ष पूँजी है। शिक्षार्थी राष्ट्र के कर्णधार हैं। इसलिये शिक्षा और शिक्षार्थी के हित में यही है कि शिक्षक में किसी प्रकार की अयोग्यता न हो। उक्त कथन में बापू की अन्तर्मन की पीड़ा छिपी हुई है। वे ऐसा शिक्षक चाहते है जो बालक की आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों का ऐसा समुचित विकास कर सके जैसे एक कुशल शिल्पी राजप्रासाद का निर्माण करता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि शिक्षा का मुख्य साधन उत्तम गुरू है। आज केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने सुयोग्य शिक्षकों के चयन के लिये अनेक आयोगों का गठन कर रखा है। जो सुपात्र शिक्षकों के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज के बदलते परिवेश में शिक्षक का उद्देश्य शिक्षार्थी के आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों का गुणात्मक विकास ही नहीं रह गया है प्रत्युत अनेक अवान्छित दबावों में उसे ऐसी शिक्षा देनी पड़ती है जिसे उसकी आत्मा स्वीकार नहीं कर पाती। आचार्य द्विवेदी कहते है कि अध्यापक जीवन का एक बड़ा भारी अभिशाप यह है कि आपको ऐसी सैकड़ों बातों को पढ़ना–पढ़ाना पड़ेगा जिन्हें आप न तो हृदय से स्वीकार करते है और साहित्य के लिये हितकर मानते है। यहाँ आदमी को आपा खोकर ही सफलता मिलती है।

आचार्य द्विवेदी शान्ति निकेतन कलकत्ता में शिक्षक थे। उन्हें उच्च शिक्षा के शिक्षक एवं प्रशासनिक अधिकारी के रूप में लम्बा अनुभव था। उनके उक्त कथन में एक सच्चे समर्पित, सत्यनिष्ठ एवं सुयोग्य शिक्षक की मार्मिक पीड़ा झलकती है। शिक्षक का राष्ट्र समाज तथा विद्यार्थी हित में स्वतन्त्र चिन्तिन होना चाहिये जबउसके इस चिन्तन को 'राजनीति' की परिधि में कर देने को कहीं से बाध्य कर दिया जाय तो राष्ट्र, समाज तथा शिक्षा का पतन सुनिश्चित ही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कथन है किकभी–कभी ऐसे शिक्षक देखने में आते है जिनके लिये शिक्षा–दान स्वभाव–सिद्ध होता है। वे अपने गुण से ही ज्ञान दान करते है, अपने अन्तःकरण से शिक्षा को निजी सामग्री बनाते है, उनकी प्रेरणा से छात्रों में मनन शक्ति का संचार होता है। विश्वविद्यालय के बाहर, जीवन के क्षेत्र में, उनके छात्रों की विद्या फलवती होती है। सार्थक विश्वविद्यालय वही है जो ऐसे शिक्षकों को आकर्षित करता है, जहाँ शिक्षा की सहायता से मनोलोक की सृष्टि होती है। यह सृष्टि ही सभ्यता का मूल है। लेकिन हमारे विश्वविद्यालयों में इस श्रेणी के शिक्षक न होने से भी काम चलता है– शायद और भी अच्छी तरह चलता है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के उक्त कथन के प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन में शिक्षक की योग्यता का आख्यान किया गया है। यह निर्विवाद सत्य है कि जब सुयोग्य शिक्षक अन्तःकरण की प्रेरणा से शिक्षक का कार्यभार स्वीकार करता है तब वह शिक्षार्थी को बहुत कुछ सकारात्मक दे सकने की स्थिति में होता है। जब शिक्षक मात्र रोजगार के लिये शिक्षक बनता है तब वह शिक्षार्थियों के साथ न्याय हित नहीं कर सकता क्योंकि समर्पित शिक्षक की राष्ट्र का भला कर सकते हैं। खलील जिब्रान का विचार है कि–जो अध्यापक अपने अनुगामियों में मन्दिर की छाया तले विचरण करता है, वह उन्हें अपने ज्ञान का अंश नहीं, बल्कि अपना विश्वास और वात्सल्य प्रदान करता है।

शिक्षालय ईंट गारों निर्मित निर्जीव भवन नहीं है प्रत्युत उनमें राष्ट्र की आत्मा निवास करती हैं। वहाँ मानवता ऊर्जस्वित होती है और लोक कल्याण बलवान होता है, शिक्षक अपने शिक्षार्थियों में स्वत्व तथा विश्वास और वात्सल्य का वितरण करता है। शिक्षक जैसा चाहे अपने विद्यार्थी को बना सकता है। शिक्षक के निर्देश पर उसके शिक्षार्थी क्या से क्या कर सकते हैं। ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर विंस्टन चर्चिल ने ठीक ही कहा है कि प्रधानाचार्यों के हाथों में वे शक्तियाँ है जो अभी तक प्रधानमंत्रियों को कभी नहीं मिल पाई हैं। मान लीजिये एक शिक्षक ने एक सत्र में सौ शिक्षार्थियों को शिक्षा दी। फिर ये शिक्षार्थी शिक्षक बनकर अपने शिक्षक से प्राप्त ज्ञान का अपने शिक्षार्थियों में वितरण करेंगे। यह परम्परा निरन्तर गतिमान रहेगी। एक शिक्षक लगभग पैंतीस वर्ष से चालीस वर्ष तक शिक्षण कार्य करता है। इस मध्य उसने बहुत से शिक्षार्थियों को शिक्षा दी फिर वे शिक्षार्थी शिक्षक बनते हैं। यह परम्परा अनवरत गति से चलती है हेनरी बुक्स एडम्स ने ठीक ही कहा है कि –शिक्षक अनन्त काल को प्रभावित करता है, वह कभी नहीं बता सकता कि उसका प्रभाव कहाँ तक जाता है।

एक ओर शिक्षक का शिक्षार्थियों के माध्यम से राष्ट्र के प्रति जवाबदेही है तो दूसरी ओर राष्ट्र की भी सरकार के माध्यम से यह जिम्मेदारी बनती है कि वह सुयोग्य शिक्षकों का चयन करे और उसे सम्मानजनक वेतन प्रदान करें। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को

Scanned by CamScanner

सर्वोपरि सम्मान दिया गया है आज कतिपय कारणों से उसमें न्यूनता आ रही है जिसे दूर करना ही श्रेयस्कर होगा। बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका में और भी उत्तरदायित्व बढ़ गया है क्योंकि उदारीकरण, बाजारीकरण एवं वैश्वीकरण ने विद्या प्राप्ति के मार्ग में अनेक विघ्न उपस्थित कर दिया है।

सन्दर्भ

1. श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था।
   संकान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
   यस्योभवं साधु स शिक्षकाणां
   धुरि प्रति ठापयितव्य एवं।। कालिदास मालविकाग्निमित्र, 1–16
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी अशोक के फूल पृ0– 61
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी अशोक के फूल पृ0– 146
4. रवीन्द्रनाथ ठाकुर कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1932 का भाषण
5. खलील जिब्रानन जीवन–सन्देश, पृ0– 67
6- https://m.jagaran.com/new Thus. 19 Oct 2017
7. ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, आर0 लाल बुक डिपो, एन0आर0 स्वरूप सक्सेना, डॉ0 डी0पी0 मिश्र, पृ0 438–439

Scanned by CamScanner